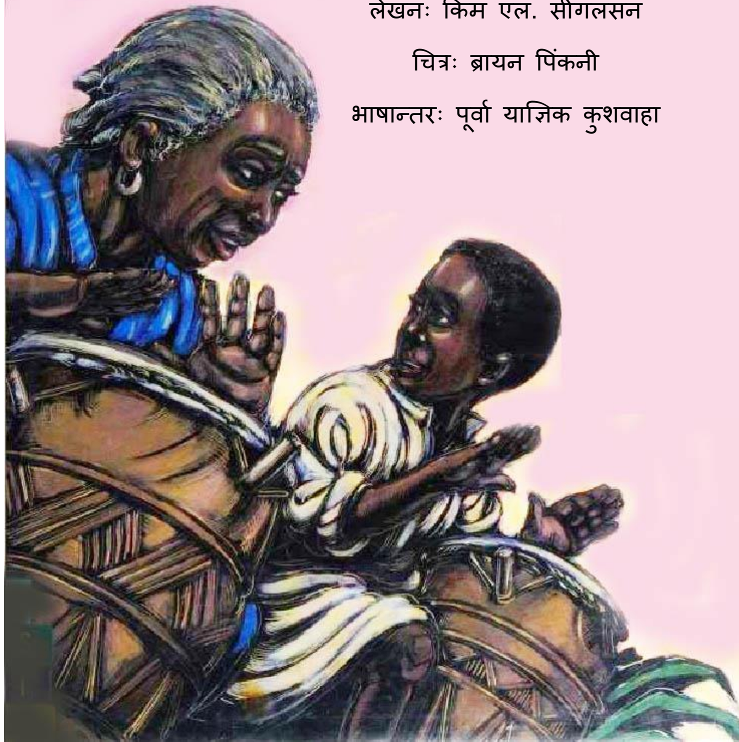
ढ़ोलों के युग में

लेखनः किम एल. सीगलसन

चित्रः ब्रायन पिंकनी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



आज से बहुत समय पहले ... ज़िन्दा बलूत के पेड़ ढ़ोलों की थाप से थर्रा जाते थे और, कुछ तो यह भी कहते हैं कि यह वह समय था जब लोग पानी की सतह के नीचे चल सकते थे ...

तब ऐसा होता था कि खलिहान जितने बड़े जहाज़, टीकैटल खाड़ी के पास बने घाट पर आते थे - गुलामों के जहाज़, जो अफ्रीकी लोगों को स्थानीय खेतों में खटने के लिए लाया करते थे। इन टापुओं में जबरन ला कर बसाए गए कुछ अफ्रीकी बकरी के खालों से मढ़े ढ़ोल बनाते थे ताकि खुद को अपने देस की, अपने घर की याद दिला सकें, जहाँ वे लौटना चाहते थे। छोटा मेंटू अफ्रीका को जानता न था। वह तो पैदा ही उस टापू पर हुआ था। पर दादी ट्वी, उनके खून में तो अफ्रीका बसा हुआ था - उन्हें अपने घर की याद सताती थी। ट्वी की सीखों के बदौलत मेंटू ने ढ़ोल बजाना सीखा, उनके संगीत का सम्मान करना सीखा। सो, जब एक गुलाम जहाज़ टीकैटल खाड़ी के घाट पर आया, जो ढ़ोल की थापें भेज रहा था - जो दरअसल जहाज़ में कैद अफ्रीकी गुलामों की गर्जना थी, घर लौटने की इच्छा की थापें थीं। उन थापों ने ट्वी को पुकारा, आज़ादी की गुहार लगाई। पर मुक्ति सिर्फ़ टीकैटल खाड़ी के मटमैले पानी में ही मिल सकती थी। ट्वी को उन थापों के आकर्षण और उस द्वीप के बीच चुनना था, जिसे मेंटू घर कहता था।

कॉल्डेकॉट सम्मान पदक विजेता ब्रायन पिंकने ने उम्दा कथाकार किम सीगलसन के साथ इस असाधारण गुल्ला (अफ्रीकी-अमरीकी द्वीपवासी) कथा को प्रस्तुत किया है, जो रहस्यमयी, लुभावनी और असीम साहस की कहानी है। यह पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देगी।



ढ़ोलों के युग में

लेखनः किम एल. सीगलसन

चित्रः ब्रायन पिंकनी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

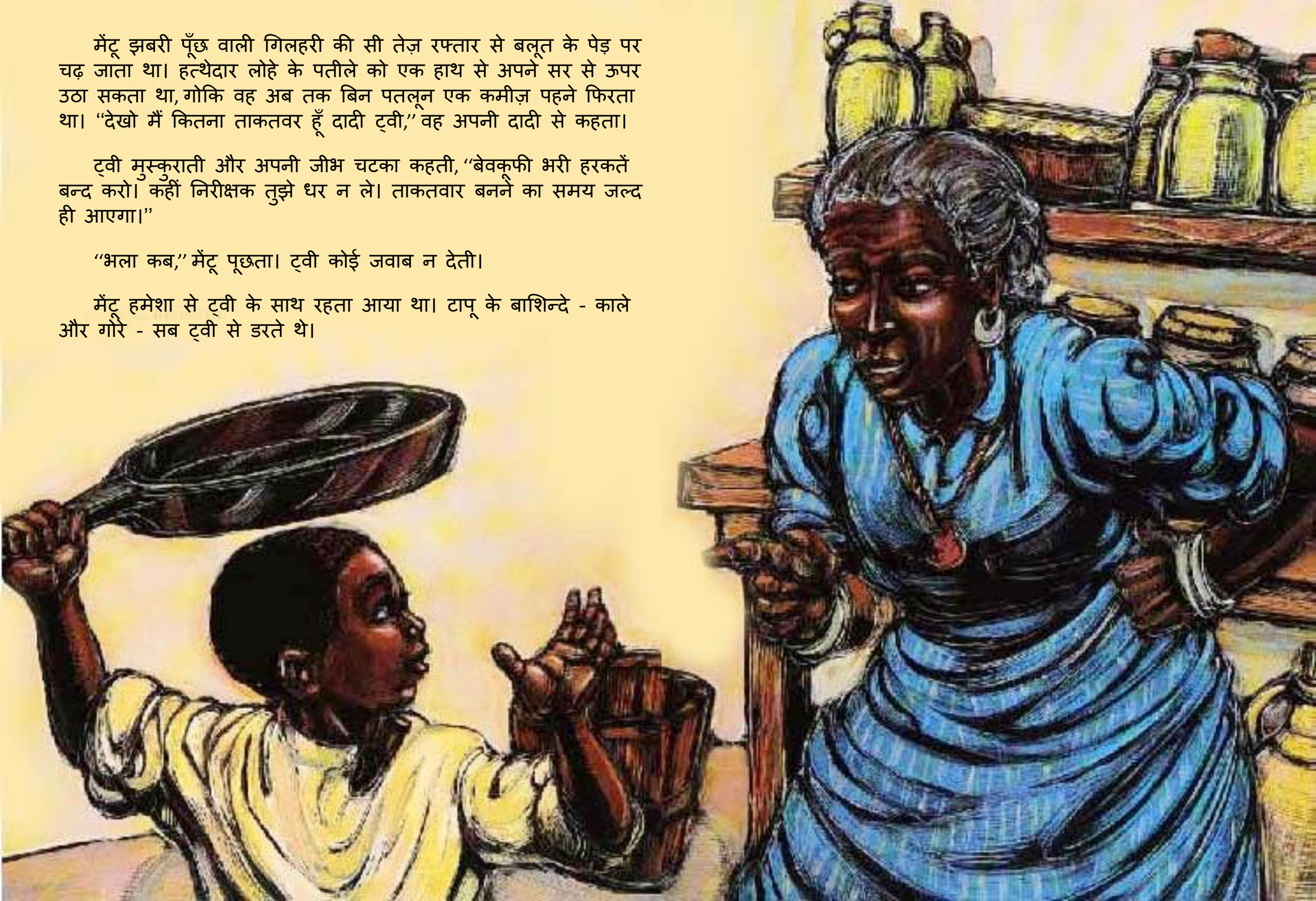
आज से बहुत समय पहले, दलदली घास के मैदानों से घिरे उस टापू में, जिसे समुद्र का ज्वार-भाटा पखारता था, औरतें और पुरुष अपने बच्चों के साथ गुलामी में जीते थे। यह वह समय था जब विशाल बलूत के पेड़ ढ़ोलों की थापों से थर्रा उठते थे। और कुछ तो यह तक कहते थे, कि यह वह समय था जब इन्सान पानी की सतह के नीचे चल सकते थे।

उन शुरुआती दिनों में होता यह था कि खलिहान जितने बड़े जहाज़ टीकैटल खाड़ी के कगार पर बने घाट में रुका करते थेः समुद्री लुटेरों के जहाज़ जिन्हें अपने खज़ाने गाड़ने होते थे, माल ढ़ोने वाल जहाज़ जिनमें दालचीनी लदी होती थी, और गुलामों वाले जहाज़ जो अफ्रीकी लोगों को टापू के खेतों में काम करने के लिए लाया करते थे।

इन लाए गए अफ्रीकियों में से कुछ लकड़ी को तराशना, घास की सुन्दर टोकरियाँ बनाना और बकरी की चमड़ी से मढे ढ़ोल बनाना जानते थे। इन चीज़ों से वे खुद को अपने देस-घर की याद दिलाया करते थे। वे वहाँ लौटना जो चाहते थे।

पर मेंटू नाम का एक लड़का अफ्रीका को जानता ही नहीं था, न वहाँ जाने को तरसता था। वह तो उसी टापू पर पैदा जो हुआ था।



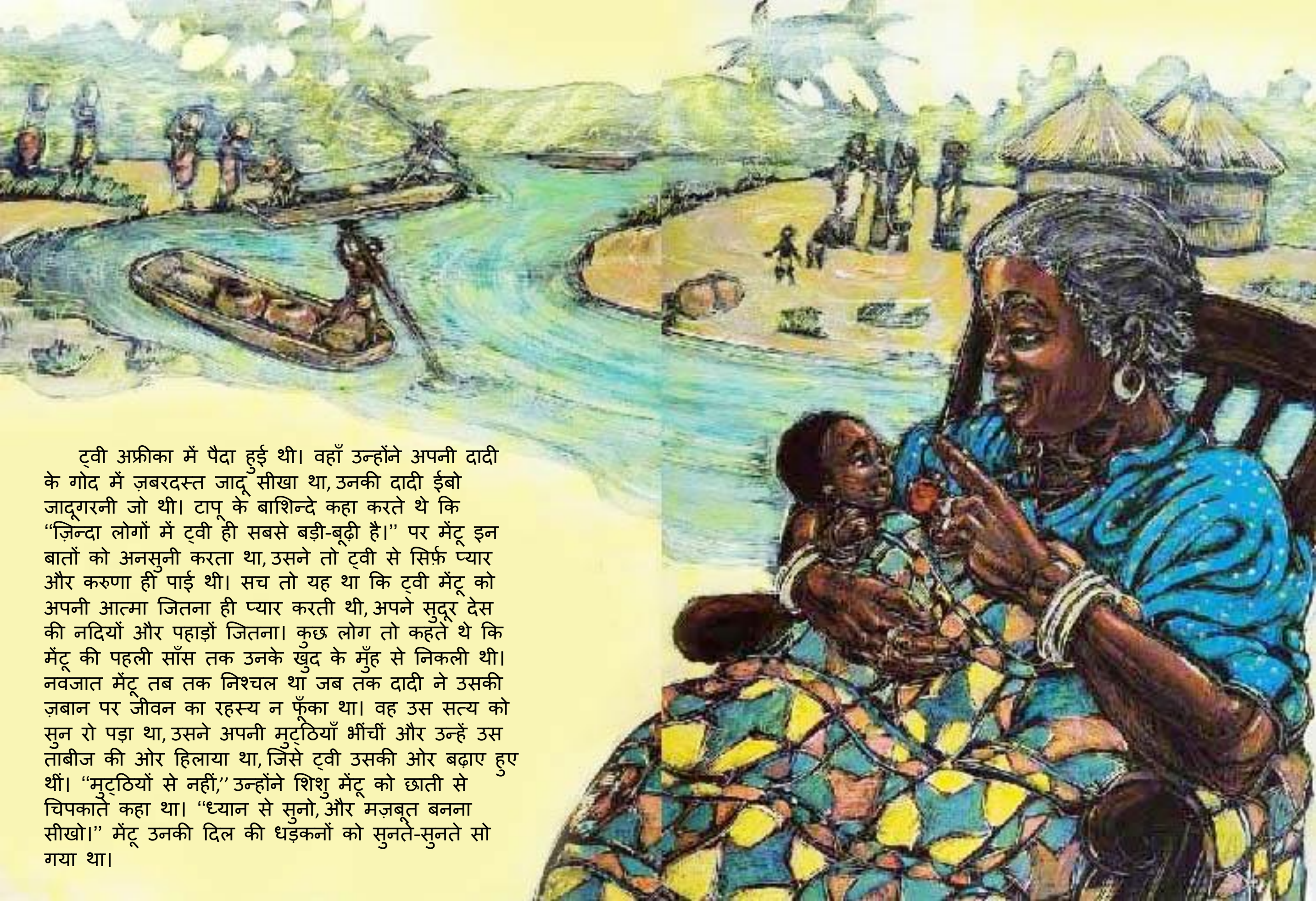


मेंटू झबरी पूँछ वाली गिलहरी की सी तेज़ रफ्तार से बलूत के पेड़ पर चढ़ जाता था। हत्थेदार लोहे के पतीले को एक हाथ से अपने सर से ऊपर उठा सकता था, गोकि वह अब तक बिन पतलून एक कमीज़ पहने फिरता था। ''देखो मैं कितना ताकतवर हूँ दादी ट्वी,'' वह अपनी दादी से कहता।

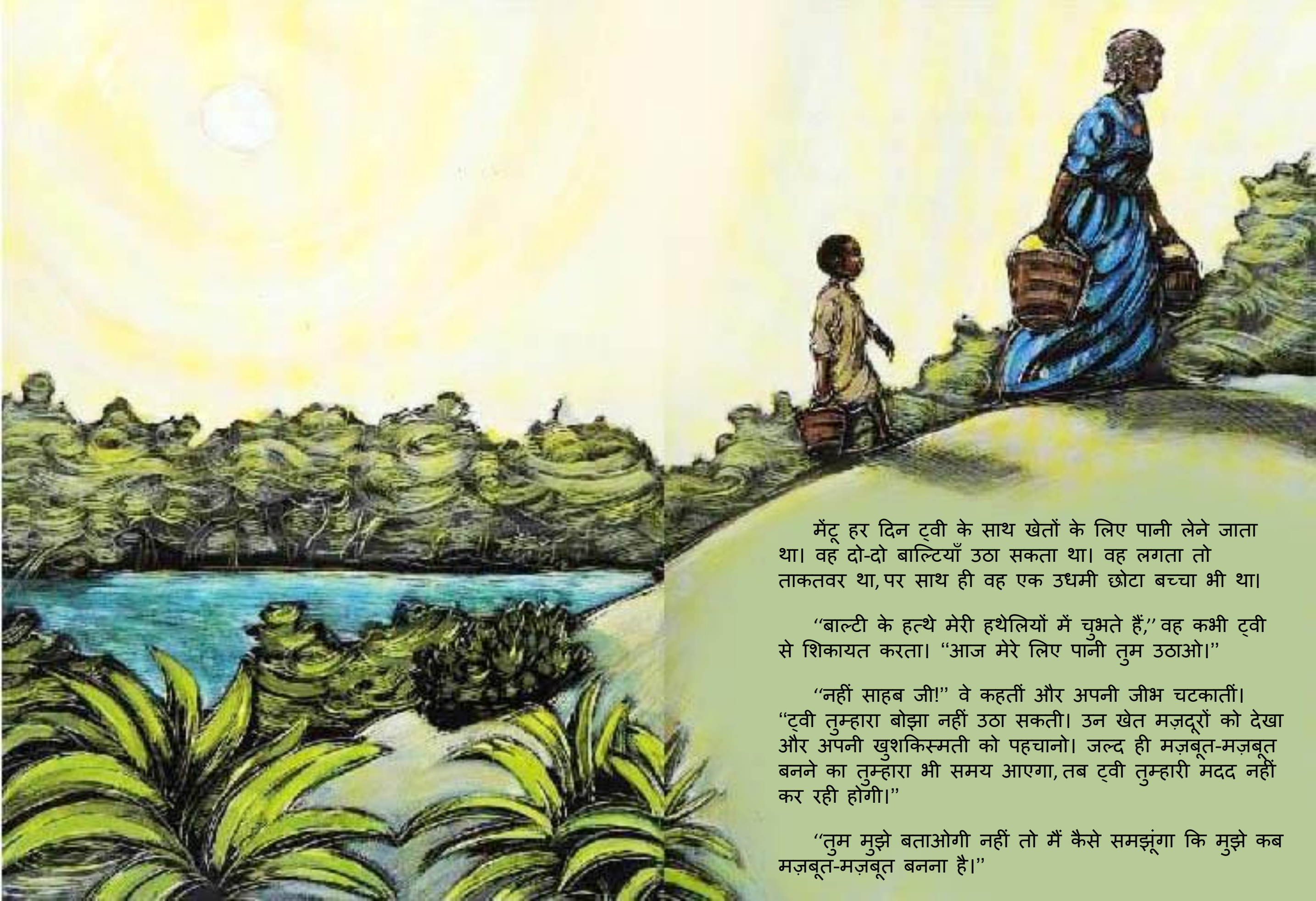
ट्वी मुस्कुराती और अपनी जीभ चटका कहती, ''बेवकूफी भरी हरकतें बन्द करो। कहीं निरीक्षक तुझे धर न ले। ताकतवर बनने का समय जल्द ही आएगा।''

''भला कब,'' मेंटू पूछता। ट्वी कोई जवाब न देती।

मेंटू हमेशा से ट्वी के साथ रहता आया था। टापू के बाशिन्दे - काले और गोरे - सब ट्वी से डरते थे।



ट्वी अफ्रीका में पैदा हुई थी। वहाँ उन्होंने अपनी दादी के गोद में ज़बरदस्त जादू सीखा था, उनकी दादी ईबो जादूगरनी जो थी। टापू के बाशिन्दे कहा करते थे कि "ज़िन्दा लोगों में ट्वी ही सबसे बड़ी-बूढ़ी है।" पर मेंटू इन बातों को अनसुनी करता था, उसने तो ट्वी से सिर्फ़ प्यार और करुणा ही पाई थी। सच तो यह था कि ट्वी मेंटू को अपनी आत्मा जितना ही प्यार करती थी, अपने सुदूर देस की नदियों और पहाड़ों जितना। कुछ लोग तो कहते थे कि मेंटू की पहली साँस तक उनके खुद के मुँह से निकली थी। नवजात मेंटू तब तक निश्चल था जब तक दादी ने उसकी ज़बान पर जीवन का रहस्य न फूँका था। वह उस सत्य को सुन रो पड़ा था, उसने अपनी मुट्ठियाँ भींचीं और उन्हें उस ताबीज की ओर हिलाया था, जिसे ट्वी उसकी ओर बढ़ाए हुए थीं। "मुट्ठियों से नहीं," उन्होंने शिशु मेंटू को छाती से चिपकाते कहा था। "ध्यान से सुनो, और मज़बूत बनना सीखो।" मेंटू उनकी दिल की धड़कनों को सुनते-सुनते सो गया था।

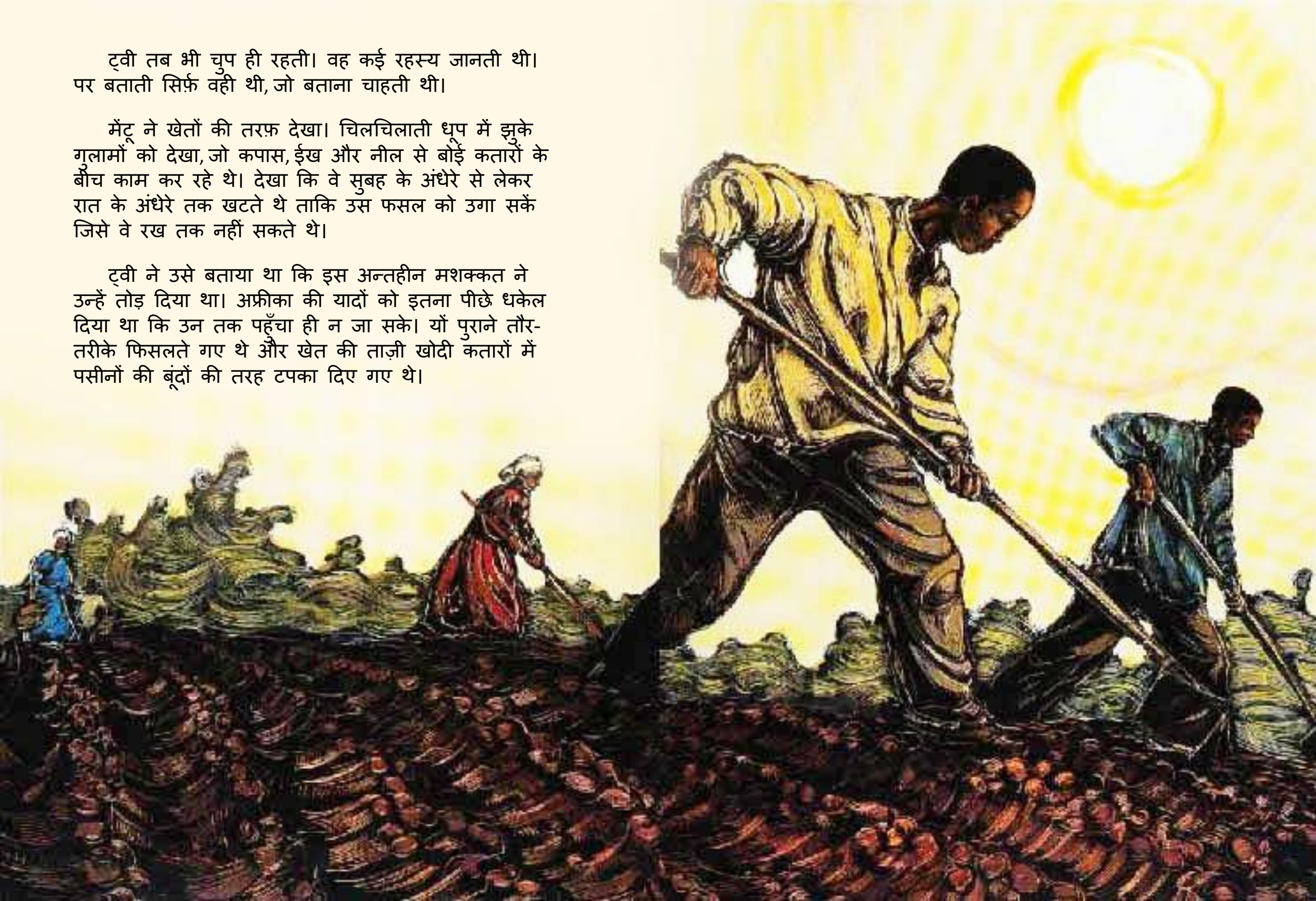


मेंटू हर दिन ट्वी के साथ खेतों के लिए पानी लेने जाता था। वह दो-दो बाल्टियाँ उठा सकता था। वह लगता तो ताकतवर था, पर साथ ही वह एक उधमी छोटा बच्चा भी था।

"बाल्टी के हत्थे मेरी हथेलियों में चुभते हैं," वह कभी ट्वी से शिकायत करता। "आज मेरे लिए पानी तुम उठाओ।"

"नहीं साहब जी!" वे कहतीं और अपनी जीभ चटकातीं। "ट्वी तुम्हारा बोझा नहीं उठा सकती। उन खेत मज़दूरों को देखा और अपनी खुशकिस्मती को पहचानो। जल्द ही मज़बूत-मज़बूत बनने का तुम्हारा भी समय आएगा, तब ट्वी तुम्हारी मदद नहीं कर रही होगी।"

"तुम मुझे बताओगी नहीं तो मैं कैसे समझूंगा कि मुझे कब मज़बूत-मज़बूत बनना है।"



ट्वी तब भी चुप ही रहती। वह कई रहस्य जानती थी। पर बताती सिर्फ़ वही थी, जो बताना चाहती थी।

मेंटू ने खेतों की तरफ़ देखा। चिलचिलाती धूप में झुके गुलामों को देखा, जो कपास, ईख और नील से बोई कतारों के बीच काम कर रहे थे। देखा कि वे सुबह के अंधेरे से लेकर रात के अंधेरे तक खटते थे ताकि उस फसल को उगा सकें जिसे वे रख तक नहीं सकते थे।

ट्वी ने उसे बताया था कि इस अन्तहीन मशक्कत ने उन्हें तोड़ दिया था। अफ्रीका की यादों को इतना पीछे धकेल दिया था कि उन तक पहुँचा ही न जा सके। यों पुराने तौर-तरीके फिसलते गए थे और खेत की ताज़ी खोदी कतारों में पसीनों की बूंदों की तरह टपका दिए गए थे।



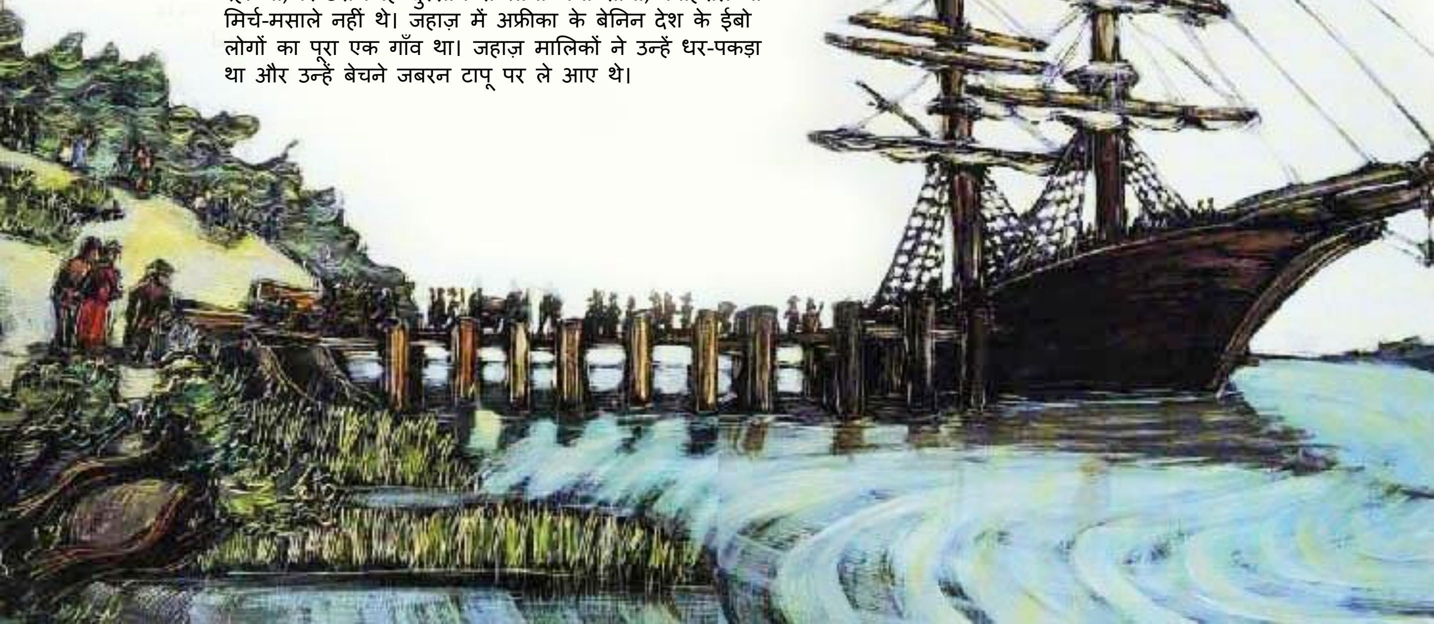
पर ट्वी को पहले का समय याद था।

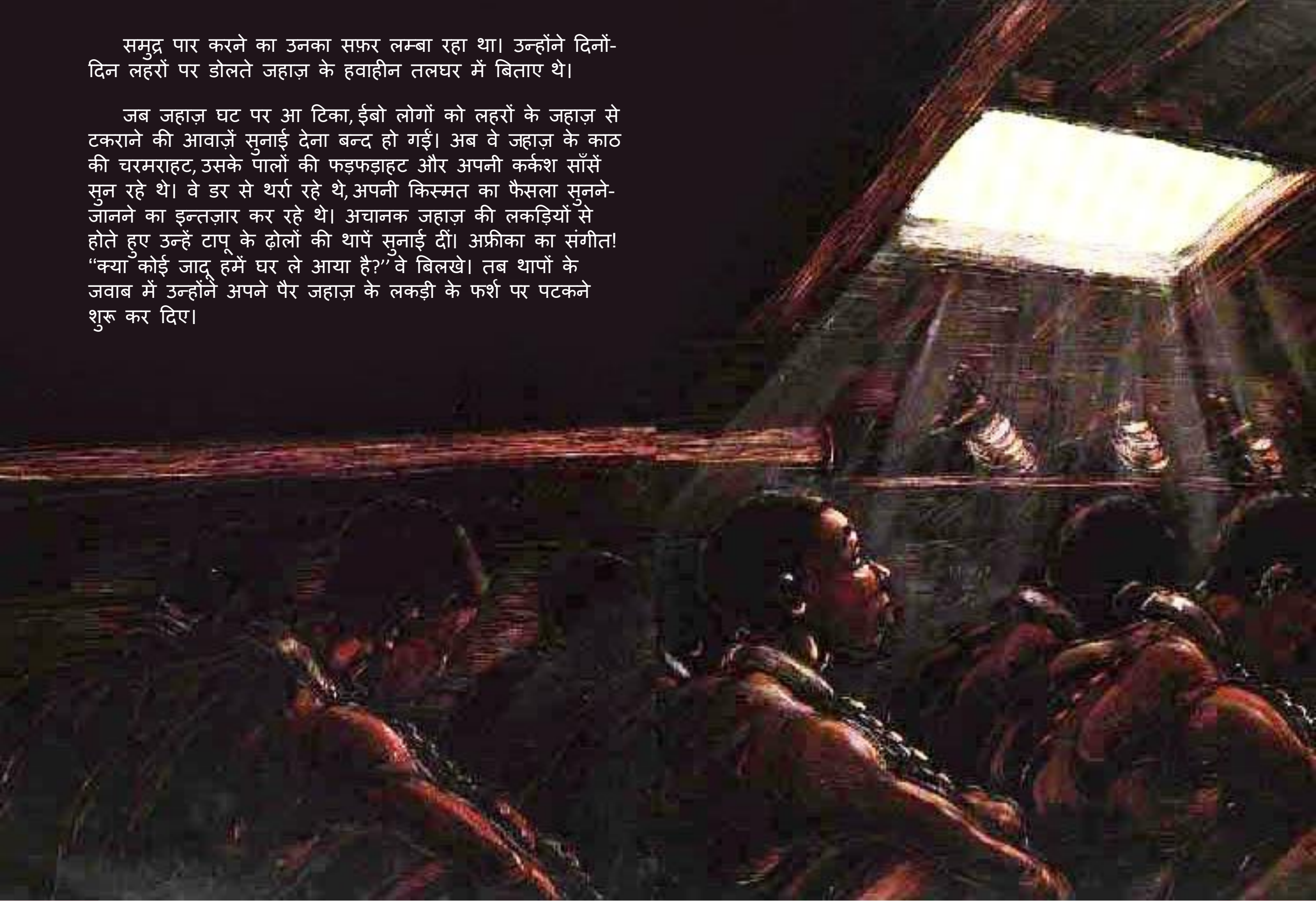
वह सुबह काम करते समय पुराने बोल उच्चारा करती थी। दोपहर में मेंटू को तब तक अफ्रीकी गीत सुनाया करते थी, जब तक वह उन्हें पलट कर सुना न दे। रात का खाना खाते वक़्त वह पुरानी कहानियाँ सुनाया करती थी, जो इतनी दमदार होती थीं कि मेंटू उनके देस की हवा की खुशबू को लगभग सूंघ सकता था। उन्होंने ढ़ोल को अपने पैरों के बीच दबा मेंटू को वे प्रचीन तालें तब तक सिखाई थीं, जब तक वे मेंटू को अपनी दिल की धड़कनों जितनी सहज-स्वाभाविक न लगने लगीं थीं।

तब एक ऐसा गरम दिन आया कि जंगली मक्खियों तक ने भिनभिनाना बन्द कर दिया और छायादार पेड़ों तले सुस्ताने बैठ गईं। उस बेजान चुप्पी में मेंटू और ट्वी ने अपनी बाल्टियाँ कुंए के पानी से भरीं, पर वे उन्हें ले खेतों तक पहुँचते उसके पहले ही टापू के दूसरे छोर से ढ़ोलों की आवाज़ सुनाई दी। धम-धमाक! धम-धमाक! यह लय में बंधा संदेशा था, मतलब था "एक जहाज़ आया है! एक जहाज़ आया है!"

मेंटू ने अपना ढ़ोल बजाया, ता-धिन्न-ना! ता-धिन्न-ना! "हमने सुन लिया! हमने सुन लिया!"

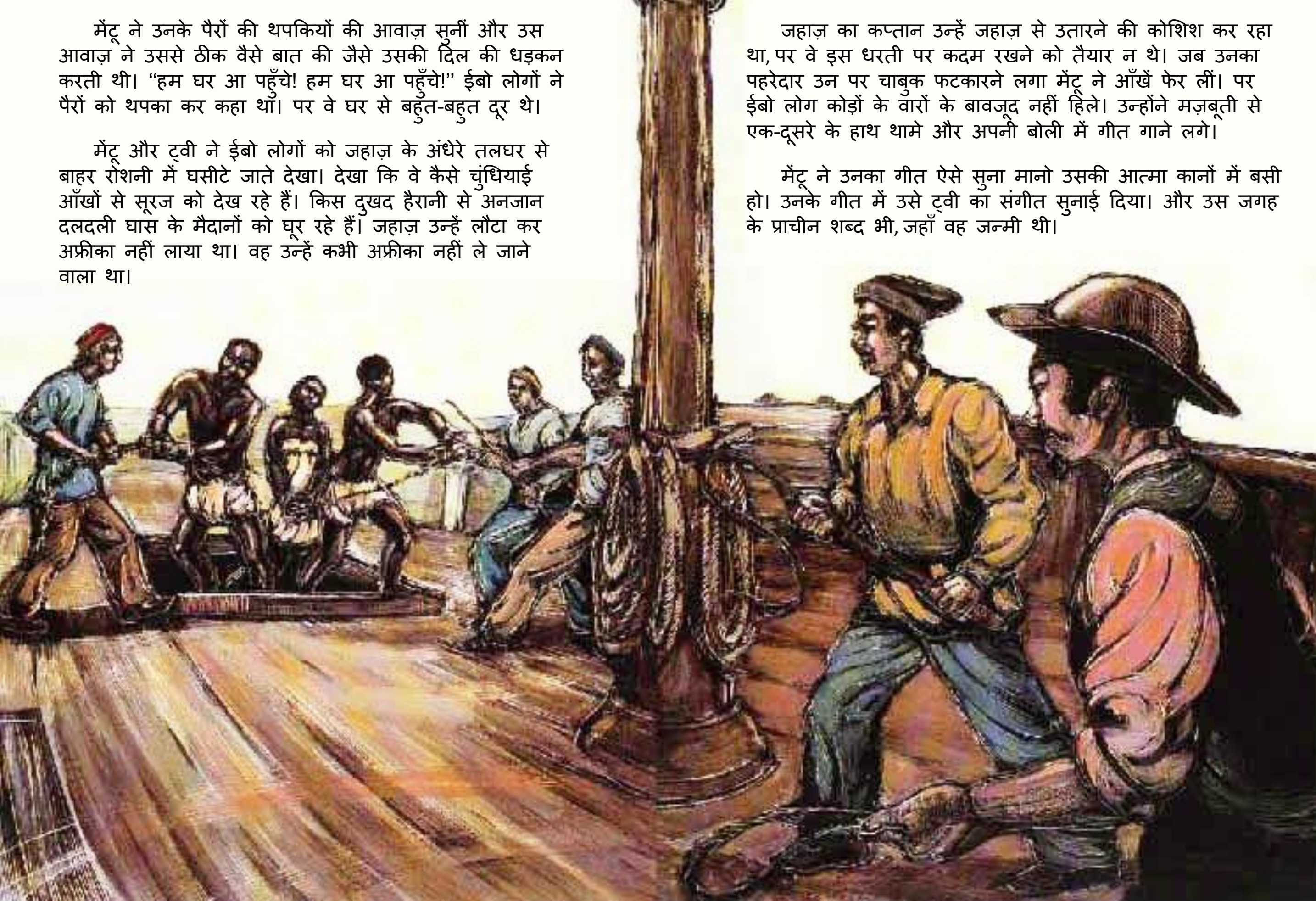
मेंटू और ट्वी बाकी बाशिन्दों के साथ घाट पर यह देखने गए कि जहाज़ क्या लाया है। जहाज़ पर हिस्पानी झंडा लहरा रहा था, पर उसमें हिन्दुस्तान से लाया गया सोना, जवाहरात या मिर्च-मसाले नहीं थे। जहाज़ में अफ्रीका के बेनिन देश के ईबो लोगों का पूरा एक गाँव था। जहाज़ मालिकों ने उन्हें धर-पकड़ा था और उन्हें बेचने जबरन टापू पर ले आए थे।





समुद्र पार करने का उनका सफ़र लम्बा रहा था। उन्होंने दिनों-दिन लहरों पर डोलते जहाज़ के हवाहीन तलघर में बिताए थे।

जब जहाज़ घट पर आ टिका, ईबो लोगों को लहरों के जहाज़ से टकराने की आवाज़ें सुनाई देना बन्द हो गईं। अब वे जहाज़ के काठ की चरमराहट, उसके पालों की फड़फड़ाहट और अपनी कर्कश साँसें सुन रहे थे। वे डर से थर्रा रहे थे, अपनी किस्मत का फैसला सुनने-जानने का इन्तज़ार कर रहे थे। अचानक जहाज़ की लकड़ियों से होते हुए उन्हें टापू के ढ़ोलों की थापें सुनाई दीं। अफ्रीका का संगीत! “क्या कोई जादू हमें घर ले आया है?” वे बिलखे। तब थापों के जवाब में उन्होंने अपने पैर जहाज़ के लकड़ी के फर्श पर पटकने शुरू कर दिए।

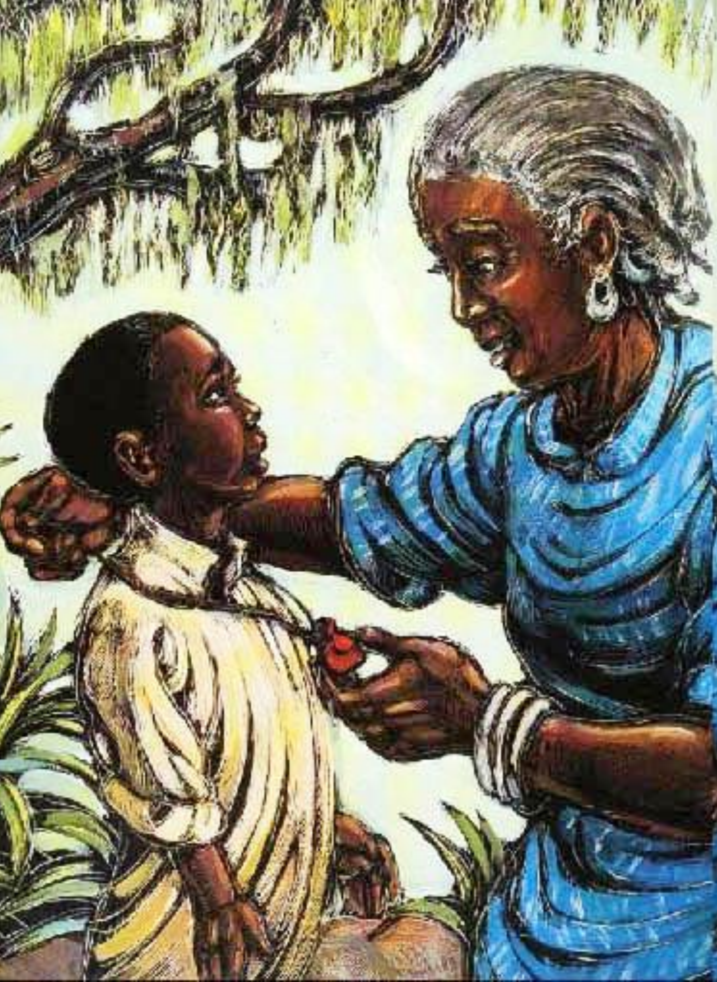


मेंटू ने उनके पैरों की थपकियों की आवाज़ सुनीं और उस आवाज़ ने उससे ठीक वैसे बात की जैसे उसकी दिल की धड़कन करती थी। “हम घर आ पहुँचे! हम घर आ पहुँचे!” ईबो लोगों ने पैरों को थपका कर कहा था। पर वे घर से बहुत-बहुत दूर थे।

मेंटू और ट्वी ने ईबो लोगों को जहाज़ के अंधेरे तलघर से बाहर रोशनी में घसीटे जाते देखा। देखा कि वे कैसे चुंधियाई आँखों से सूरज को देख रहे हैं। किस दुखद हैरानी से अनजान दलदली घास के मैदानों को घूर रहे हैं। जहाज़ उन्हें लौटा कर अफ्रीका नहीं लाया था। वह उन्हें कभी अफ्रीका नहीं ले जाने वाला था।

जहाज़ का कप्तान उन्हें जहाज़ से उतारने की कोशिश कर रहा था, पर वे इस धरती पर कदम रखने को तैयार न थे। जब उनका पहरेदार उन पर चाबुक फटकारने लगा मेंटू ने आँखें फेर लीं। पर ईबो लोग कोड़ों के वारों के बावजूद नहीं हिले। उन्होंने मज़बूती से एक-दूसरे के हाथ थामे और अपनी बोली में गीत गाने लगे।

मेंटू ने उनका गीत ऐसे सुना मानो उसकी आत्मा कानों में बसी हो। उनके गीत में उसे ट्वी का संगीत सुनाई दिया। और उस जगह के प्राचीन शब्द भी, जहाँ वह जन्मी थी।



"वे क्या कह रहे हैं ट्वी?" उसने जानना चाहा। "एकदम जादूई लगा रहा है।"

ट्वी की आँखें यों दमकीं मानो काले पानी पर पड़ती चाँद की रोशनी हो। "पुराना जादू, जाने कब का बिसरा-भूला," वे फुसफुसाईं। "ये लोग घर लौटना चाहते हैं। वे कह रहे हैं कि पानी उन्हें यहाँ ले आया है और वही उन्हें देस लौटा ले जा सकता है, सचमें!" ट्वी ने अपने ताबीज की पोटली उतार कर मेंटू के गले में डाल दी। "वह पानी मुझे भी संभाल सकता है मेंटू। तुम अब बड़े हो चुके हो। मज़बूत-मज़बूत बनने का तुम्हारा समय पास आ चुका है।"

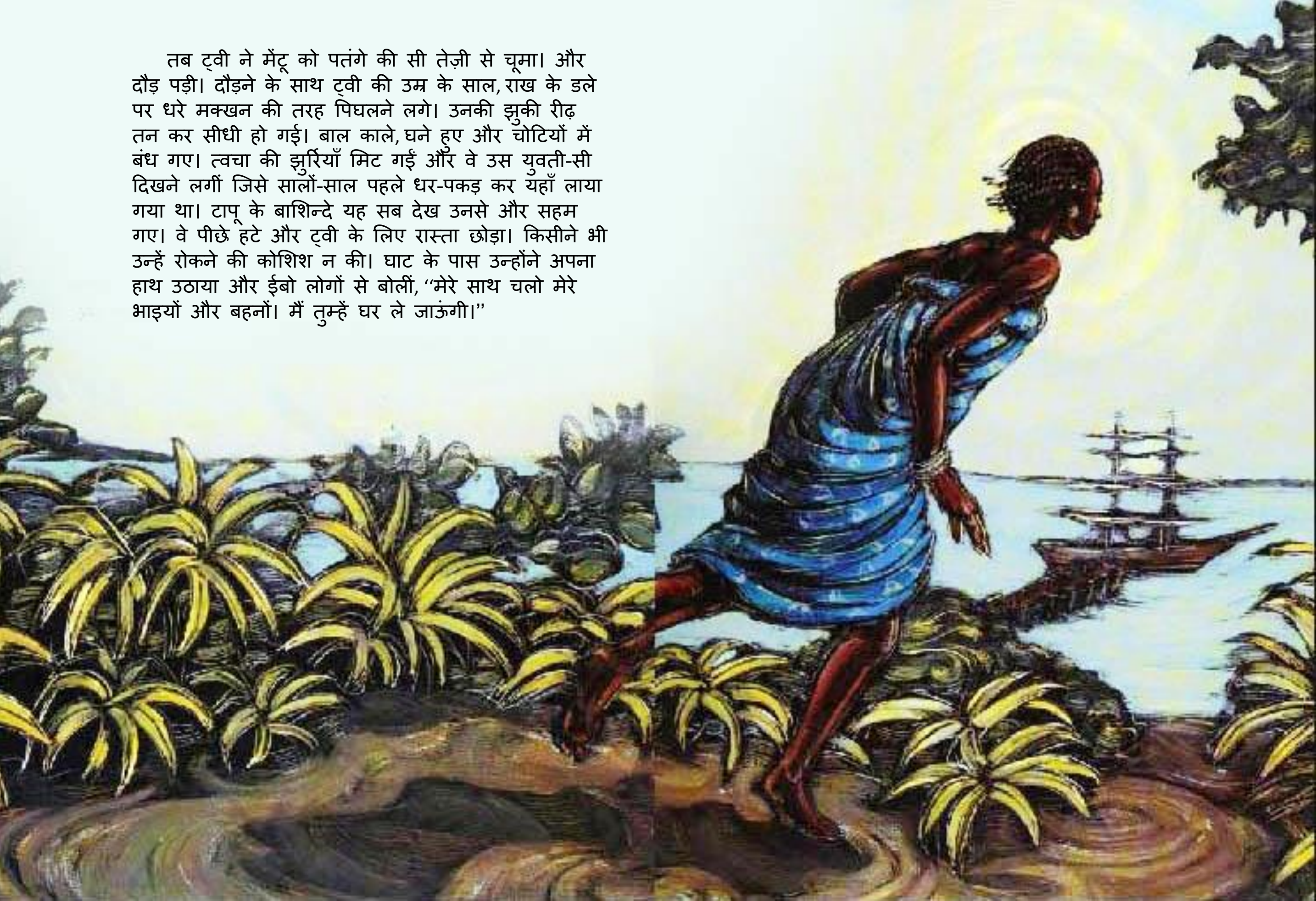
मेंटू थरथराने लगा, "क्या पानी मुझे भी साथ ले जा सकता है ट्वी? मैं भी तुम्हारे साथ जाना चाहता हूँ।"

दादी ट्वी ने अपना सिर हिलाया। "पानी तुम्हें नहीं ले जाएगा। तुम यहाँ पैदा हुए हो। दूसरों को भी नहीं ले जाएगा, क्योंकि वे बहुत कुछ भूल चुके हैं।"

"पर तुमने मुझे सारे रहस्य सिखाए ही नहीं हैं, ट्वी," मेंटू रुंआसी आवाज़ में बोला। "तुमने मुझे अब तक बताया ही नहीं है कि मेरा समय कब आएगा।"

ट्वी ने अपनी जीभ चटकाई, क्योंकि वह अब भी शैतानी करने वाला बच्चा ही था।

"ट्वी ने तुम्हें बहुत कुछ सिखाया है। तुम जितना सोचते हो उससे कहीं ज़्यादा रहस्य बताए हैं। पर तुम्हें एक और बात बताती हूँ। मज़बूत-मज़बूत होने का तुम्हारा समय तब आएगा जब तुम्हारी पीठ खेत में झुकी होगी और तुम्हारे हाथों में कपास के कांटे चुभे होंगे। क्योंकि तब तुममें पुराने तौर-तरीके कमज़ोर होने की कोशिश करेंगे। पर ऐसा होने न देना। खूब मज़बूत बने रहना ताकि यह न भूलो कि तुम कौन हो। कहाँ से आए हो। ताकि तुम दूसरों को भी यह सब याद दिलाने में मदद कर सको। अब मुझे तुम्हें छोड़ जाना होगा, मेरे बच्चे, मेरी जान!"



तब ट्वी ने मेंटू को पतंगे की सी तेज़ी से चूमा। और दौड़ पड़ी। दौड़ने के साथ ट्वी की उम्र के साल, राख के डले पर धरे मक्खन की तरह पिघलने लगे। उनकी झुकी रीढ़ तन कर सीधी हो गई। बाल काले, घने हुए और चोटियों में बंध गए। त्वचा की झुर्रियाँ मिट गईं और वे उस युवती-सी दिखने लगीं जिसे सालों-साल पहले धर-पकड़ कर यहाँ लाया गया था। टापू के बाशिन्दे यह सब देख उनसे और सहम गए। वे पीछे हटे और ट्वी के लिए रास्ता छोड़ा। किसीने भी उन्हें रोकने की कोशिश न की। घाट के पास उन्होंने अपना हाथ उठाया और ईबो लोगों से बोलीं, ‘‘मेरे साथ चलो मेरे भाइयों और बहनों। मैं तुम्हें घर ले जाऊंगी।’’

जब वे लोग ट्वी के साथ हो लिए मेंटू बिलख पड़ा। गुलामों के पहरेदारों ने उन गुलामों की गर्दनों और बाज़ुओं को रस्सियों से जकड़ने की कोशिश की। पर रस्सियाँ उनके माँस और हड्डियों पर से यों सरक गईं मानो धुंआ या समुद्री पानी हों।

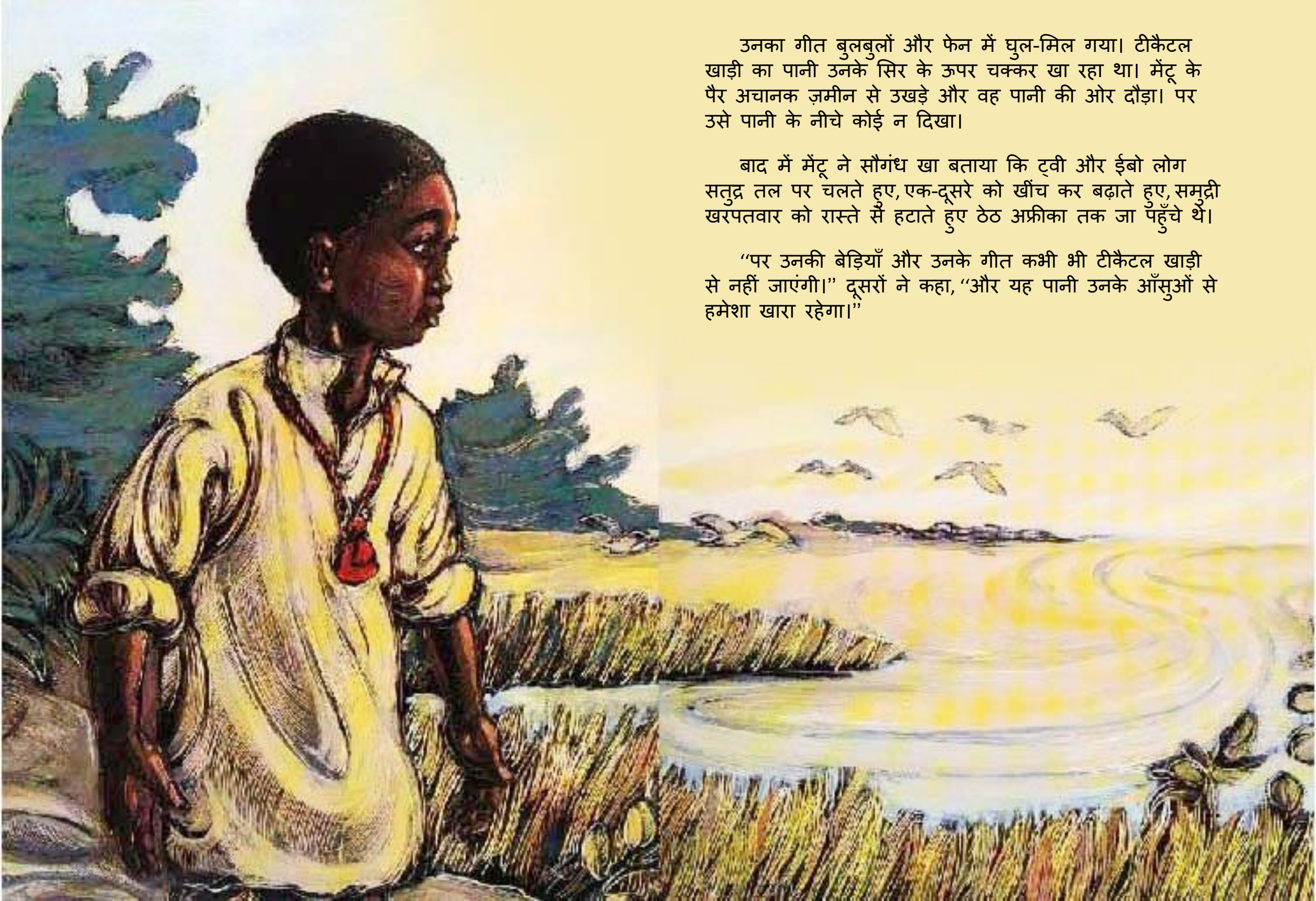
ट्वी ने ईबो लोगों के हाथ थामे, उन्हें घाट से उतार पानी के किनारे ले गई। "ट्वी!" मेंटू ने आवाज़ दी, पर वे उसके लिए भी मुड़ी नहीं।



टीकैटल खाड़ी के पानी में उतरते लोगों की अगुवाई करते ट्वी उच्चार रही थी। मेंटू ने अपने आँसू पोंछे और ट्वी जैसी आवाज़ में, जितनी ताकतवर वह उसे बना सकता था बना, वह भी साथ-साथ उच्चारने लगा। "पानी हमें देस ले जा सकता है! पानी हमें घर ले जा सकता है!" उसने उनकी ओर दौड़ने की कोशिश भी की। पर पाया कि उसके पैर ज़मीन से जकड़े हुए हैं, वह हिल तक न सका।

जब पानी उनके कंधों से ऊपर उठने लगा और तब उनकी गरदनों से भी ऊपर, ट्वी और ईबो लोगों ने अपने चेहरे आसमान की ओर उठाए। वे चलते गए, उनकी बेड़ियाँ चटक कर खुल गईं। "पानी हमें देस ले जा सकता है! पानी हमें घर ले जा सकता है!" वे गाए। "वह हमें घर ले जा सकता है।"

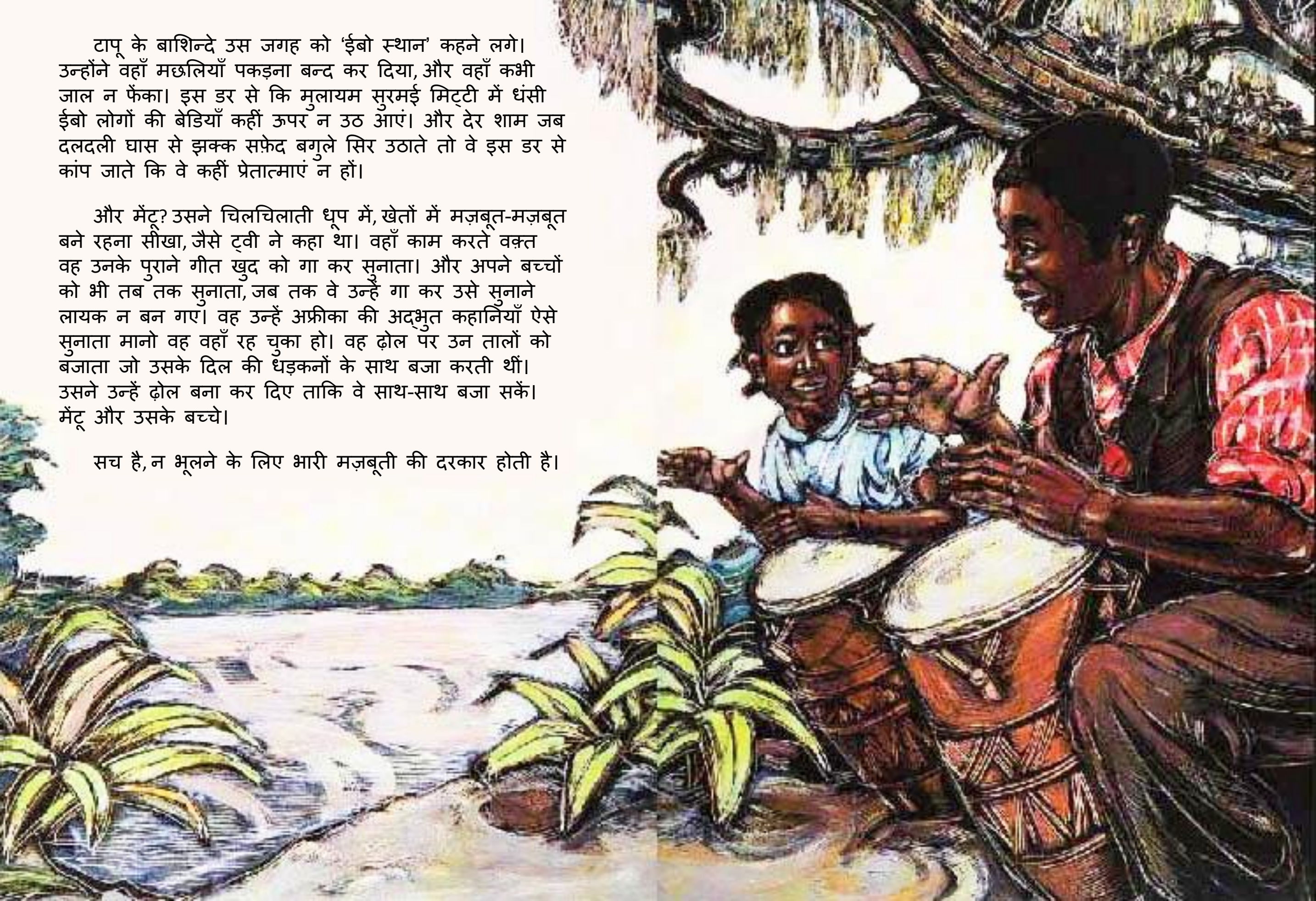




उनका गीत बुलबुलों और फेन में घुल-मिल गया। टीकैटल खाड़ी का पानी उनके सिर के ऊपर चक्कर खा रहा था। मेंटू के पैर अचानक ज़मीन से उखड़े और वह पानी की ओर दौड़ा। पर उसे पानी के नीचे कोई न दिखा।

बाद में मेंटू ने सौगंध खा बताया कि ट्वी और ईबो लोग सतुद्र तल पर चलते हुए, एक-दूसरे को खींच कर बढ़ाते हुए, समुद्री खरपतवार को रास्ते से हटाते हुए ठेठ अफ्रीका तक जा पहुँचे थे।

''पर उनकी बेड़ियाँ और उनके गीत कभी भी टीकैटल खाड़ी से नहीं जाएंगी।'' दूसरों ने कहा, ''और यह पानी उनके आँसुओं से हमेशा खारा रहेगा।''



टापू के बाशिन्दे उस जगह को 'ईबो स्थान' कहने लगे। उन्होंने वहाँ मछलियाँ पकड़ना बन्द कर दिया, और वहाँ कभी जाल न फेंका। इस डर से कि मुलायम सुरमई मिट्टी में धंसी ईबो लोगों की बेडियाँ कहीं ऊपर न उठ आएं। और देर शाम जब दलदली घास से झक्क सफ़ेद बगुले सिर उठाते तो वे इस डर से कांप जाते कि वे कहीं प्रेतात्माएं न हों।

और मेंटू? उसने चिलचिलाती धूप में, खेतों में मज़बूत-मज़बूत बने रहना सीखा, जैसे ट्वी ने कहा था। वहाँ काम करते वक़्त वह उनके पुराने गीत खुद को गा कर सुनाता। और अपने बच्चों को भी तब तक सुनाता, जब तक वे उन्हें गा कर उसे सुनाने लायक न बन गए। वह उन्हें अफ्रीका की अद्भुत कहानियाँ ऐसे सुनाता मानो वह वहाँ रह चुका हो। वह ढ़ोल पर उन तालों को बजाता जो उसके दिल की धड़कनों के साथ बजा करती थीं। उसने उन्हें ढ़ोल बना कर दिए ताकि वे साथ-साथ बजा सकें। मेंटू और उसके बच्चे।

सच है, न भूलने के लिए भारी मज़बूती की दरकार होती है।

लेखक की कलम से

इन द टाइम ऑफ द ड्रम्स जॉर्जिया व साउथ कैरोलाइना के पास समुद्री टापुओं में बसे अफ्रीकी-अमरीकी समुदायों में पीढ़ियों से सुनाई जाने वाली मौखिक कथाओं पर आधारित है। मैंने यह कहानी पहले-पहल अपनी नानी से सुनी थी। उन्होंने इसे एक भूत कथा की तरह सुनाई थी। इस कहानी को अक्सर एक स्मृति अंश या छोटी दंत कथा के रूप में याद किया जाता है। इसकी एक प्रस्तुति जॉर्जिया युनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित पुस्तक *ड्रम्स एण्ड शैडोस्* में मिलती है।

सी-आइलैण्ड के कई समुदाय इस घटना पर दावा कर इसे अपनी बताते हैं। इनमें अधिकांश समुदाय गुल्ला लोगों के हैं, या फिर जैसे गुल्ला लोग खुद को बुलाते हैं – सॉल्टवॉटर गीची लोगों के हैं। गुल्ला शब्द कहाँ से और कैसे आया यह अज्ञात है पर भाषाविद् और इतिहासकार इसे गुलामों के व्यापार से जोड़ते हैं। पहले इसका उपयोग उन अफ्रीकियों के लिए किया जाता था जिन्हें अंगोला से लाया गया था। पर अब इसका उपयोग उन गुलामों के वंशजों और उनकी संस्कृति के लिए किया जाता है, जो ब्लैक सी-आइलैण्ड के निवासी थे।

गुलामों के बीच मान्यता यह थी कि गुल्ला लोगों में अलौकिक शक्तियाँ हैंः जादू-टोना करने की, निर्जीव वस्तुओं को नियंत्रित कर पाने की, उड़ने की। यह कथा जिस तरह सुनाई जाती है उसमें ईबो लोगों ने शारीरिक मौत या 'गुलामी से मुक्ति' को तब चुना था जब वे पानी में उतरे थे। इसमें शक नहीं कि कई अफ्रीकियों के लिए शरीर की मृत्यु, समाप्ति का संकेत नहीं था। क्योंकि शरीर खत्म होने पर ही तो आत्मा आज़ाद हो, मध्य मार्ग से यात्रा कर, देस के तटों पर लौट सकती थी। गुलाम बनाए गए अफ्रीकियों का सशक्तीकरण अपनी आस्था, अपने विश्वासों और उम्मीद से ही तो होता था। एक कथाकार के रूप में मैंने उनकी शक्तियों में विस्तार कर पानी के नीचे चलने की शक्ति जोड़ दी।

इन ख़यालों के साथ मैं सेंट सिमोन टापू में डनबर खाड़ी के पास जा बसी, जो इबो'स लैंडिंग यानी ईबो स्थान जितना ही मनोनीत है। और वहाँ मैंने उन बेड़ियों को खड़खड़ाते सुना। और वह कथा सुनी जो *इन द टाइम्स ऑफ द ड्रम्स* थी।

- किम एल. सीगलसन